

महात्मा गाँधी बालिका विद्यालय (पी.जी.) कॉलेज फिरोजाबाद

(NAAC Accredited: B+ Grade)

सम्बद्ध: डॉ० भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा



उद्योग अकादमिक एकीकरण एवं कौशल विकास प्रकोष्ठ

सत्र : 2026-27

दिनांक : 12-10-2026

कार्यशाला : उद्यमिता जागरूकता एवं ग्लास डेकोरेशन

प्रो० प्रियदर्शिनी उपाध्याय
प्राचार्या

श्रीमती प्रज्ञा केसरवानी
संयोजिका

कार्यशाला

महात्मा गांधी बालिका पी.जी. कॉलेज, फिरोजाबाद के उद्योग-अकादमिक एकीकरण एवं कौशल विकास प्रकोष्ठ तथा कांच उद्योग विकास केंद्र, फिरोजाबाद के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 12 अक्टूबर 2026 को 'उद्यमिता जागरूकता एवं ग्लास डेकोरेशन' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को व्यावहारिक कौशल से परिचित कराना, उनमें उद्यमिता की भावना विकसित करना तथा शिक्षा के साथ-साथ रोजगार एवं स्वरोजगार के अवसरों के प्रति जागरूक बनाना था। कार्यक्रम में महाविद्यालय की लगभग 80 छात्राओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।



कार्यक्रम का शुभारंभ कार्यशाला की संयोजिका श्रीमती प्रजा केसरवानी एवं कार्यशाला की प्रशिक्षिका डॉ. ज्योति जैन द्वारा मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन करके किया गया। इस अवसर पर ज्ञान, कला और सृजनशीलता के महत्व को रेखांकित करते हुए छात्राओं को कौशल विकास से संबंधित गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया गया।



कार्यशाला की प्रशिक्षिका डॉ. ज्योति जैन ने अपने संबोधन में कहा कि भारत सरकार का उद्देश्य विद्यार्थियों को नियमित शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक कौशल प्रदान करना भी है, ताकि वे भविष्य में आत्मनिर्भर बन सकें। इसी उद्देश्य को सफल बनाने के लिए वह भारत के विभिन्न महाविद्यालयों में छात्राओं को ग्लास डेकोरेशन जैसे रचनात्मक कौशलों का प्रशिक्षण प्रदान करने की दिशा में कार्य कर रही हैं। उन्होंने बताया कि आज के समय में केवल शैक्षणिक योग्यता ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक ज्ञान, रचनात्मकता और व्यावसायिक दक्षता भी आवश्यक है। ग्लास डेकोरेशन एक ऐसी कला है, जिसमें सामान्य कांच की वस्तुओं को रंगों, आकर्षक डिजाइनों तथा सजावटी सामग्रियों के माध्यम से सुंदर एवं उपयोगी उत्पादों में परिवर्तित किया जा सकता है।



डॉ. ज्योति जैन ने ग्लास डेकोरेशन की प्रक्रिया को विस्तार से समझाते हुए बताया कि इस कला में रंगों का उचित संयोजन, डिजाइन का चयन, कांच की सतह की सफाई तथा सजावटी सामग्री का सही प्रयोग विशेष महत्व रखता है। उन्होंने छात्राओं को यह भी समझाया कि कार्य करते समय कांच की वस्तुओं को सावधानीपूर्वक संभालना चाहिए और उपयोग की जाने वाली सामग्री के निर्देशों का पालन करना चाहिए। कार्यस्थल की स्वच्छता, एकाग्रता, धैर्य तथा तैयार उत्पाद की गुणवत्ता पर ध्यान देना भी आवश्यक है।

उन्होंने छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि रचनात्मक कौशल का निरंतर अभ्यास करके अपनी प्रतिभा को विकसित किया जा सकता है। ग्लास डेकोरेशन के माध्यम से सजावटी बोतलें, फूलदान, जार, उपहार सामग्री तथा विभिन्न प्रकार की कलात्मक वस्तुएं तैयार करने की संभावनाएं हैं। इन उत्पादों का उपयोग घरों की सजावट, उत्सवों तथा विभिन्न विशेष अवसरों पर किया जा सकता है।



कार्यशाला में उद्यमिता जागरूकता पर विशेष बल दिया गया। डॉ. ज्योति जैन ने छात्राओं को बताया कि किसी कौशल को सीखने का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत रुचि की पूर्ति करना नहीं, बल्कि उसका उपयोग भविष्य में रोजगारपरक अवसरों की पहचान के लिए भी किया जा सकता है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि ग्लास डेकोरेशन जैसे रचनात्मक कौशल के माध्यम से छात्राएं छोटे स्तर पर सजावटी उत्पाद तैयार करने तथा अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार स्वरोजगार की संभावनाओं पर विचार कर सकती हैं। इसके लिए उत्पाद की गुणवत्ता, आकर्षक डिजाइन, लागत का उचित आकलन, समय-प्रबंधन और ग्राहकों की आवश्यकताओं को समझना आवश्यक है। उन्होंने छात्राओं को इस बात के प्रति जागरूक किया कि कला एवं कौशल के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए निरंतर अभ्यास, नवीन प्रयोग और गुणवत्ता बनाए रखना महत्वपूर्ण है। फिरोजाबाद कांच उद्योग के लिए प्रसिद्ध है। ऐसे में स्थानीय औद्योगिक परिवेश से संबंधित कौशल का ज्ञान छात्राओं को कांच से बने सजावटी उत्पादों तथा उनसे जुड़े कार्यक्षेत्रों को समझने का अवसर प्रदान करता है।

महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. प्रियदर्शिनी उपाध्याय ने छात्राओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि उन्हें कौशल विकास से संबंधित कार्यक्रमों में अनिवार्य रूप से उपस्थित होना चाहिए, क्योंकि ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से रोजगार के अनेक अवसरों और व्यावहारिक प्रशिक्षण की जानकारी प्राप्त होती है। कार्यक्रम के दौरान सत्र 2025-26 में प्रकोष्ठ एवं कांच उद्योग विकास केंद्र, फिरोजाबाद के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित कार्यशाला में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली छात्राओं को महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. प्रियदर्शिनी उपाध्याय एवं प्रशिक्षिका डॉ. ज्योति जैन द्वारा प्रमाण-पत्र तथा बैग प्रदान किए गए।



प्रमाण-पत्र वितरण कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण भाग रहा। इसके माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली छात्राओं को उनके प्रशिक्षण की औपचारिक मान्यता प्रदान की गई। यह पहल छात्राओं को कौशल अर्जित करने, अपनी दक्षताओं को विकसित करने और भविष्य में अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती है।



कार्यशाला में महाविद्यालय की लगभग 80 छात्राओं ने सहभागिता की। कार्यक्रम के माध्यम से छात्राओं को ग्लास डेकोरेशन की उपयोगिता, आवश्यक सावधानियों, रचनात्मक कार्य की प्रक्रिया तथा उद्यमिता से संबंधित संभावनाओं को समझने का अवसर मिला। कार्यक्रम का संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर कीर्ति मिश्रा ने प्रभावी एवं उत्साहवर्धक ढंग से किया। उन्होंने कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों को सुव्यवस्थित रूप से आगे बढ़ाया।



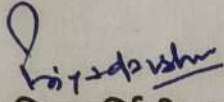
कार्यक्रम की संयोजिका श्रीमती प्रजा केसरवानी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। उन्होंने महाविद्यालय की प्राचार्य, प्रशिक्षिका डॉ. ज्योति जैन, कांच उद्योग विकास केंद्र तथा कार्यक्रम के सफल आयोजन में सहयोग प्रदान करने वाले सभी शिक्षिकाओं, छात्राओं एवं सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर उद्योग एकेडमिक एकीकरण एवं कौशल विकास प्रकोष्ठ के सदस्यों में डॉ० अनीता चौरसिया, डॉक्टर चर्चा, डॉक्टर भावना, डॉ प्रीति सिंह पटेल, श्रीमती ममता गुप्ता एवं असिस्टेंट प्रोफेसर कीर्ति मिश्रा उपस्थित रहीं।



‘उद्यमिता जागरूकता एवं ग्लास डेकोरेशन’ विषय पर आयोजित यह कार्यशाला छात्राओं के कौशल विकास, रचनात्मक अभिव्यक्ति और उद्यमिता के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास रही। कार्यक्रम ने यह स्पष्ट किया कि शिक्षा के साथ व्यावहारिक कौशल का

विकास छात्राओं को आत्मनिर्भर बनने तथा रोजगार की संभावनाओं को समझने में सहायता प्रदान कर सकता है।

महाविद्यालय के उद्योग-अकादमिक एकीकरण एवं कौशल विकास प्रकोष्ठ तथा कांच उद्योग विकास केंद्र, फिरोजाबाद का यह संयुक्त प्रयास छात्राओं को व्यावसायिक दक्षता से जोड़ने की दिशा में सराहनीय रहा। इस प्रकार की कार्यशालाएं छात्राओं में आत्मविश्वास, रचनात्मकता, व्यावहारिक समझ और उद्यमशील दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक हैं। कार्यक्रम का समापन सकारात्मक वातावरण में हुआ।



प्रो० प्रियदर्शिनी उपाध्याय
प्राचार्या



श्रीमती प्रज्ञा केसरवानी
संयोजिका